वर्ष :: 33 अंक : 29
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

/mithilavarnan

बोकारो :: रविवार, 16 अप्रैल, 2023 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका
अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मैनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

बोकारो में देश का पहला सीबीएम गैस कलेक्शन स्टेशन बनकर तैयार

>> रंग लाया 26 वर्षों का प्रयास, ओएनजीसी बोकारो ने गैस बिक्री के क्षेत्र में स्थापित किया मील का पत्थर

>> 441 करोड़ की परियोजना से प्रतिदिन एक लाख मिलियन मीट्रिक घन मीटर गैस की होगी प्रोसेसिंग

विजय कुमार झा

बोकारो : आयल एंड नैचुरल गैस कारपोरेशन (ओएनजीसी) के सीबीएम (कोल बेड मिथेन) एसेट का बोकारो में विगत 26 वर्षों से किया जा रहा प्रयास अंततः रंग लाया। सीबीएम एसेट ने जीसीएस-बोकारो की सफलतापूर्वक कमीशनिंग कर इसे एसेट का पहला गैस कलेक्टिंग कम गैस कम्प्रेशन स्टेशन के रूप में बनाकर तैयार कर लिया है। इसका लक्ष्य ओएनजीसी को भारत के सीबीएम मानचित्र पर एक थोक सीबीएम उत्पादक के रूप में स्थापित करना है। जीसीएस-बोकारो ओएनजीसी और आईओसीएल का संयुक्त उपक्रम क्रमशः 80 और 20 प्रतिशत भागीदारी के साथ सीबीएम ब्लॉक के पैच-ए में एक प्रमुख उत्पादन प्रतिष्ठान है। यह देश का पहला सीबीएस गैस कलेक्शन स्टेशन है, जिसे गैस बिक्री के क्षेत्र में मील का पत्थर माना जा रहा है।

कूप-क्षेत्र के निर्माण एवं पाइपलाइन से इसे जोड़ने का कार्य ओएनजीसी सीबीएम एसेट द्वारा शुरू किया गया था। इसमें परियोजना के हिस्से के रूप में भूतल सुविधाओं के निर्माण के लिए मैसर्स टाटा प्रोजेक्ट्स लिमिटेड और मेसर्स कॉरटेक इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड के कंसोर्टियम को ओईएस दिल्ली द्वारा (शेष पेज- 7 पर)

113 कूपों से उत्पादित सीबीएम की होगी बिक्री

इसके अलावा, कॉरपोरेट मार्केटिंग ने पांच गैस ग्राहकों के साथ संपत्ति द्वारा गैस बिक्री समझौते (जीएसए) पर हस्ताक्षर करने की सुविधा भी प्रदान की है। जीसीएस (गैस कलेक्शन सेंटर)-बोकारो को प्रतिदिन एक लाख मानक घन मीटर गैस की प्रोसेसिंग तथा 750 घन मीटर उत्पादित पानी को संभालने के लिए डिजाइन किया गया है। वेल साइट सेपरेटर में मुक्त पानी के प्रारंभिक पृथक्करण के बाद 13 ट्रंक-लाइनों के माध्यम से बहने वाली 113 कुओं से उत्पादित सीबीएम गैस को जीसीएस-बोकारो से संसाधित कर बेचा जाएगा। फिलहाल 55 कुएं इस इंस्टालेशन से जुड़े हुए हैं।

ईडी के निर्देशन में धरातल पर उतारी परियोजना

परियोजना को चालू कर इसे व्यावहारिक रूप देने में टीम के सदस्य, खास तौर से सरफेस टीम और इंजीनियरिंग सर्विसेज के सदस्यों ने लगातार 10 दिनों तक समर्पित होकर सुदीप्त चक्रवर्ती, एलएम (अनुरक्षण) और एसके भगत, एसएएम और सरफेस मैनेजर- असीम कुमार, सीजीएम (पी) के मार्गदर्शन में काम किया। एचडब्ल्यूएस उदय पासवान, जीजीएम (पी), एसएसएम आलोक दास, सीजीएम (आरईएस), एचडीएस बलबीर सिंह, सीजीएम (डी) और एचएलएस-आर के कनौजिया, जीएम (वेल्स) ने इस मील के पत्थर की उपलब्धि में योगदान दिया। अग्निशमन सेवाएं, मानव संसाधन, वित्त, रसद, सुरक्षा, चिकित्सा अनुभाग आदि विभागों के कर्मियों का भी सराहनीय योगदान रहा। बता दें कि यह गैस कलेक्शन सेंटर बोकारो से लगभग 80 किलोमीटर दूर गोमिया प्रखंड में स्थित है। सीबीएम एसेट के अधिशासी निदेशक सह परिसंपत्ति प्रबंधक आदित्य जौहरी ने परियोजना को धरातल पर उतारने में केंद्रीय भूमिका निभाई।

नई कमान बीएसएल के निदेशक प्रभारी अमरेंदु प्रकाश होंगे अब नए सेल अध्यक्ष, मूलतः मधुबनी के रहनेवाले हैं; गांव में भी हर्ष

बोकारो से तय किया इंजीनियर से सेल चेयरमैन तक का सफर

कार्यालय संवाददाता

बोकारो : बोकारो इस्पात संयंत्र के निदेशक प्रभारी अमरेंदु प्रकाश भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड (सेल) के नए मुखिया होंगे। 30 अप्रैल को वर्तमान चेयरमैन सोमा मंडल की सेवानिवृत्ति के उपरांत आवश्यक प्रक्रियाएं पूरी होने के बाद वह यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी संभालेंगे। कहा जाय, तो श्री प्रकाश के लिए बोकारो काफी लकी साबित रहा है। सेल में बोकारो स्टील प्लांट से ही उनका करियर एक इंजीनियर के रूप में शुरू हुआ था और आज सेल में सर्वोपरि पद पर वह आसीन होने जा रहे हैं। उन्हें यह नया मुकाम मिलने पर बोकारो स्टील के कर्मियों से लेकर सभी बोकारोवासियों में हर्ष है और श्री प्रकाश को बधाई देने वालों का तांता लग गया है। विदित हो कि सेल चेयरमैन को लेकर लोक उपक्रम चयन बोर्ड के हुए साक्षात्कार के बाद बुधवार को बोकारो स्टील प्लांट के प्रभारी निदेशक अमरेंदु प्रकाश का सेल चेयरमैन के लिए चयन कर लिया गया है। इस पद के लिए देश के अलग-अलग लोक उपक्रमों के 9 अधिकारियों ने साक्षात्कार दिया था, जिसमें श्री प्रकाश चयनित हुए।

हॉट स्ट्रिप मिल में बिताए 20 साल

बोकारो स्टील प्लांट में प्रभारी निदेशक के रूप में 28 सितंबर 2020 में अपना योगदान दिया था। इससे पहले सेल के अध्यक्ष सचिवालय, नई दिल्ली में वह मुख्य महाप्रबंधक के पद पर थे। बीआईटी सिंदरी से मेटलर्जी में डिग्री लेने के बाद उन्होंने 1991 में सेल के बोकारो स्टील प्लांट की हॉट स्ट्रिप मिल से अपने करियर की शुरुआत की थी। उन्होंने अपने शुरुआती करियर के लगभग 20 साल हॉट स्ट्रिप मिल में बिताए। इसके बाद उन्हें पीपीसी और एससी विभाग में काम करने का मौका मिला। अप्रैल 2016 में प्रकाश को सेल सचिवालय में उप महाप्रबंधक के पद पर स्थानांतरित कर दिया गया। वे जून 2017 में महाप्रबंधक बने और सितंबर 2019 से अध्यक्ष सचिवालय के सीजीएम (शेष पेज- 7 पर)

बोकारो को दिलाई विशेष अंतरराष्ट्रीय ख्याति

मूलतः मधुबनी जिलाअंतर्गत झंझारपुर के बेलाराही गांव निवासी अमरेंदु प्रकाश को सेल चेयरमैन चुने जाने पर उनके ग्रामीणों में भी हर्ष है। वहां से भी उन्हें बधाई देनेवालों का तांता लगा हुआ है। उल्लेखनीय है कि श्री प्रकाश के नेतृत्व में बोकारो ने शहरी विकास के जहां नए आयाम गढ़े हैं, वहीं बोकारो स्टील प्लांट में उत्पादन के नित्य नए-नए कीर्तिमान बनाए गए। कारोबार-जगत में बीएसएल को ख्याति तो दिलाई ही, कोरोना महामारी के दौरान में पूरे देश को प्राणवायु आक्सीजन की आपूर्ति कर लाखों-लाख लोगों की प्राण-रक्षा भी की, जिसकी चर्चा देश ही नहीं, विदेशों भी छाई रही। श्री प्रकाश की उच्च शिक्षा जमशेदपुर में हुई। आरडी टाटा हाई स्कूल के बाद जमशेदपुर को-आपरेटिव कॉलेज से उन्होंने महाविद्यालय की शिक्षा पूरी की। हिंदी, अंग्रेजी और मैथिली के अलावा उन्हें इटालियन भाषा में भी दक्षता हासिल है। कार्य के प्रति समर्पण और उनका मृदु स्वभाव ही उन्हें बाकी अधिकारियों से अलग बनाता है। उनकी अगुवाई में ही बोकारो को अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समर्थित ग्लोबल एक्टिव पार्टनर सिटी का दर्जा मिल चुका है।

- संपादकीय -

फिर सवालों के घेरे में नीतीश सरकार

बिहार में शराबबंदी कानून एक बार फिर सवालों के घेरे में है। राज्य के पूर्वी चम्पारण जिले में जहरीली शराब पीने से फिर तीन दर्जन से अधिक लोगों की असमय मौत हो गई है। इस ताजा घटना से पूर्व पिछले बुधवार को बिहार में शराबबंदी पर सुप्रीम कोर्ट ने भी सवाल खड़े किये हैं। जस्टिस के एम जोसेफ, कृष्ण मुरारी और बीवी नागरत्ना की पीठ ने राज्य सरकार के वकील से पूछा कि 'क्या आप जानते हैं कि इस अदालत में बिहार से कितनी जमानत याचिकाएं आ रही हैं? इन जमानत याचिकाओं में एक बड़ा हिस्सा राज्य के निषेध अधिनियम का है।' सर्वोच्च अदालत ने बिहार सरकार के अधिवक्ता से यह भी पूछा कि 'क्या कोई अध्ययन या कोई अनुभवजन्य डेटा है, जो यह दर्शाता है कि निषेध अधिनियम के कारण राज्य में शराब की खपत का ग्राफ नीचे आ रहा है?' शीर्ष अदालत ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि 'जब बिना किसी अध्ययन के कानून बनाए जाते हैं, तब ऐसा ही होता है।' दरअसल, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने वर्ष 2016 में जब से बिहार में शराब की बिक्री पर प्रतिबंध लगाया है, तबसे राज्य में इस प्रतिबंध को लागू करने में भारी विफलता एवं इसके विपरीत परिणामों की वजह से उन्हें इस फैसले के लिये काफी आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा है। स्पष्ट है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के शासनकाल में ही इसके पूर्व बिहार के गांव-गांव में शराब की दुकानें खुली थीं। लिहाजा ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को भी सरकार ने शराब का शौकीन बना दिया। लेकिन, बाद में केवल महिलाओं के वोट को अपने पक्ष में करने की नीयत से नीतीश ने 2016 में अचानक शराबबंदी की घोषणा कर दी। सच तो यह है कि राजनीति के अखाड़े में उच्च नैतिक मापदंड स्थापित करने का यह प्रयास बगैर किसी वजह के पागलपन में उठाया गया एक कदम ही माना जा रहा है। क्योंकि, नीतीश सरकार के इस फैसले से एक ओर जहां शराब माफियाओं को फायदा हो रहा है, वहीं राज्य सरकार को पिछले सात साल में कम से कम 28 हजार करोड़ रुपये के राजस्व का नुकसान उठाना पड़ा है। दूसरी ओर, जहरीली शराब पीने की वजह से हर साल सैकड़ों लोगों की असमय मौत की घटनाएं हो रही हैं। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि भाजपा के लोग आज बिहार में शराबबंदी कानून को गलत बता रहे हैं, जबकि वही नीतीश पहले जब भाजपा के साथ सरकार चला रहे थे तो उनके फैसले का उस समय उन्होंने कोई विरोध नहीं किया था। इसी तरह उस समय शराबबंदी कानून को गलत बताने वाले पूर्व मुख्यमंत्री व राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद आज जब नीतीश सरकार के साथ हैं तो इस फैसले को लेकर उनकी बोलती बंद है। आरोप तो यह भी है कि सत्ता से जुड़े राजनीतिक दलों के लोग ही आज शराब के अवैध कारोबार में संलिप्त हैं और यही वजह है कि गांव-गांव में दूसरे प्रदेशों से नकली शराब की खेप पहुंच रही है। इसी आड़ में गरीब तबके के लोगों के बीच जहरीली शराब परोसी जा रही है। लिहाजा, मौत का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा। बिहार में शराबबंदी पुलिस के साथ-साथ सत्ताधारी दलों से जुड़े कुछ शराब कारोबारियों की अवैध कमाई का एक बड़ा जरिया बन चुका है। यही कारण है कि कठोर नियमों के बावजूद राज्य में शराबखोरी की घटना में कोई कमी नहीं आ रही है। इसके पूर्व विगत 26 दिसम्बर, 2021 को देश के पूर्व मुख्य न्यायाधीश ने भी सार्वजनिक मंच पर से बोलते हुए बिहार सरकार द्वारा शराबबंदी पर किये जा रहे प्रयोग की निंदा की थी। उन्होंने राज्य के इस शराबबंदी कानून को तैयार किए जाने के पीछे अदूरदर्शिता की बदबू आने की बात कही थी, जिसके परिणामस्वरूप कचहरी में केसों की बाढ़ आ गई है। वह न्यायपालिका पर शराब से जुड़े मामलों के बढ़ते बोझ से नाराज दिखे थे। कुल मिलाकर, बिहार में शराबबंदी पूरी तरह न सिर्फ विफल साबित हुई है, बल्कि यह अनगिनत लोगों की मौत का कारण भी बनता जा रहा है।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

लूटतंत्र - झारखंड की बदनसीबी

आज से 23 साल पहले 15 नवंबर, 2022 को जब झारखंड अलग राज्य का गठन हुआ, उस समय विकास की नई उम्मीद का भी बीजारोपण हुआ था। राज्य बन गया, सरकार भी बन गई, लेकिन जो उम्मीद थी, उसका पौधा आज तक वृक्ष नहीं बन पाया है। वजह है भ्रष्टाचार। नेता तो नेता, अब अधिकारी भी... यह निश्चय ही राज्य की 'छवि' को धूमिल करने वाला कृत्य है।

नेताओं ने इस प्रदेश को इस महज खुद के विकास का जरिया बनाया और यही वजह रही है इस प्रदेश की राजनीतिक अस्थिरता की। नेताओं की छवि तो जगजाहिर है। उम्मीद बची थी अधिकारियों से, लेकिन जब अफसरशाही भी भ्रष्टाचार की गिरफ्त में आ जाय, तो इस प्रदेश का भगवान ही मालिक। दुर्भाग्यवश, झारखंड में लूटतंत्र हावी है और यह इस प्रदेश की बदनसीबी के सिवा कुछ भी नहीं है। पूजा सिंघल, वीरेंद्र राम और अब छवि रंजन, मतलब झारखंड के अधिकारी प्रदेश को और कितना लूटेंगे, कुछ भी छोड़ेंगे कि नहीं, यह एक बड़ा सवाल खड़ा हो गया है। झारखंड अलग राज्य के आंदोलनकारी क्या अब अपनी त्याग और तपस्या पर पछता रहे होंगे? अलग राज्य आंदोलन के नायक दिशोम गुरु शिबू सोरेन की आंखों के सामने ही झारखंड में 'लूट तंत्र' काम कर रहा है। यह बात भी सही है कि यह 'लूट तंत्र' सिर्फ फिलहाल के साढ़े तीन साल के सरकार में नहीं काम कर रहा है, पहले से ऐसा बहुत कुछ हुआ है। सियासी लैबोरेटरी कहे जानेवाले झारखंड में तो निर्दलीय विधायक भी मुख्यमंत्री बन सकते हैं और उसका नतीजा क्या रहा, पूरा देश जानता है।

बहरहाल, आलम यह है कि प्रवर्तन निदेशालय जहां हाथ डाल रहा है, वहां ही उसे गड़बड़ी मिल जा रही है। पूजा सिंघल के मामला चल ही रहा था कि वीरेंद्र राम का प्रादुर्भाव हुआ। इसके बाद अब छवि रंजन का मामला फिलहाल सामने है। संथाल परगना में चल रही जांच की बात अभी नहीं की जा रही है। यह तो अलग ही कहानी हो सकती है। ईडी की जांच में तरह-तरह के चौंकानेवाले खुलासे हो रहे हैं। आखिर पैसे के लिए पढ़े-लिखे अधिकारी अपनी प्रतिष्ठा, अपनी नौकरी, परिवार की बदनामी किस तरह दांव पर लगाकर रुपए कमाए हैं। क्या यही प्रतिज्ञा उन्होंने पदभार ग्रहण करते समय ली थी? ईडी के अधिकारियों ने छापेमारी में कम से कम 7 लोगों को गिरफ्तार किया है। कई लोग अरेस्टिंग की कतार में है। कई और लोगों से पूछताछ हो सकती है और सूत्रों की मानें तो अभी कई और आईएएस, आईपीएस अफसर जांच के घेरे में आ सकते हैं।

इधर, सियासत भी हो रही है। निर्दलीय विधायक सरयू राय ने आईएएस अधिकारी के ठिकानों पर छापे को लेकर ट्वीट किया है और कहा है कि रांची में सेना की जमीन सहित भू-खंड की अवैध बिक्री, जमाबंदी घोटाले में जांच चल रही है। छापेमारी की आंच सत्ताधारी नेताओं तक पहुंचना निश्चित है। पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी ने कहा है कि जमीन घोटाले में छवि रंजन की भूमिका को लेकर रांची के तत्कालीन कमिश्नर ने जांच रिपोर्ट दी थी, लेकिन सीएम रिपोर्ट पर कार्रवाई नहीं कर रहे हैं। मरांडी ने कटाक्ष भी किया है कि शायद सीएम खुद के फंसने तक का इंतजार करेंगे। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष दीपक प्रकाश ने भी हेमंत सरकार में भ्रष्टाचार चरम पर होने की बात कही है। कुल मिलाकर लूट-खसोट और राजनीति ही झारखंड का दुर्भाग्य बन चुका है। अब भी समय है जनता सम्मानित प्रतिनिधि माने जानेवाले नेता अपनी गरिमा को बचाएं और अधिकारी भी अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन करें, नहीं तो वह दिन दूर नहीं, जब यह रत्नगर्भा प्रदेश कंगाली की मिसाल बन जाएगा।

प्रस्तुति - आर के झा

पिताश्री सच कहा करते थे

-डॉ. सविता मिश्रा मागधी
बंगलुरू, मो.- 8618093357

पिताश्री अक्सर कहा करते थे
शायद वे
वेद पुराण के शब्दों में जिया करते थे
उनके अनुसार यदि
धन गया, तो गया,
जीवन का ऐशो-आराम
पर अथक श्रम कर
धनार्जन से
पुनः सजा सकता
मनुष्य अपना धाम,
एक पीढ़ी नहीं तो...
दूसरी पीढ़ी की सूझबूझ को
धनदेव करते प्रणाम.
पर अगर, स्वास्थ्य गया
तो मनु अधमरा हो जाता है
पीड़ा के संग-संग
पंगु भी बन जाते हैं
पर अधीन हो
बेबसी के पल बिताता है
शारीरिक कष्टों के साथ
दवा-दारू में
कंगाली को दोस्त बनता है
और शेष जीवन,
डॉक्टरों के रहमोकरम पर
अटक जाता है।
इन सबसे भी कीमती चीज
वे संस्कार को कहा करते थे
तभी सच्चाई के पथ चला करते थे
उनके अनुरूप अगर फिसल गया
मानव का संस्कार
तो पलों में हो जाता बेकार
पूर्वजों का यशस्वी संसार
बदनामी का अड्डा बनता द्वार
पीढ़ी-दर-पीढ़ी को
झेलना पड़ता तिरस्कार।
अतः बना ले यदि मनु
संस्कार को अपना स्वाभिमान
जग में पाएगा, मान-सम्मान
जीवन के इस मोड़ पर लगता है
पिताश्री सच कहा करते थे
अज्ञान गागर में
ज्ञान का सागर भरा करते थे।

कुपित प्रकृति

धह-धह धाह सं धूरा धीपल
एखन चैत अछि बीतल।
चालिस पार पहुंचलै पारा
खोंइछ मेघ केर रीतल ।।

ताप दिनोदिन बढि रहलैये
जेठक हाल की हेतै।
प्राते तापित पछबा लहकय
सगरो आगि लगेतै।।

कहि रहलै मौसिम विज्ञानी
पारा चढत पचास।
एखनहिं घास पात डहि रहलै
सूरज जरय अकास।।
पाइन पोखरिक प्राते तापत
दुपहरिया इनहोर।
माल जाल सब हाँफि रहल
बहय आंखि सं नोर।।

भौतिक सुख केर अतुल चाहमे
बदलय नित भूगोल।
अपने जांघ पर मारिके कुरहरि
करय सकल किल्लोल।।

पोखरि झांखरि नित भरि रहलै
दमकय दिव्य प्रासाद
उखनन भ' रहलै अछि जंगल
कल करखाना आबाद।।

भूगर्भक हो खनन नित्यप्रति
वन जल नित्य विनाश।
प्रकृति क्षुब्ध भ' दहकि रहल
कोना जीवनक आश।।

पिघलि रहल हिमक ग्लीशियर
नीचा जल तल भेलै।
व्यथित ताप सं जीवन तलफय
सरिता सजल बिलेलै।।

जाधरि नहि हम बचा के राखब
जंगल सरित पहाड़ ।
प्रकृत कुपित भ' निश्चय डांरत
करतै नित्य प्रहार।।

बेमौसम बरसात भसाओत
भीषण तापक वृष्टि।
अस्त-व्यस्त जन जीवन हेतै
रहत ने बांचल श्रृष्टि।।

- शम्भुनाथ 'आसी'

पहले ऐंठे रुपए, अब केस रफा-दफा करने का बना रहे दबाव

खेल के नाम पर खेल

बोकारो में क्रिकेट की आड़ में युवाओं के भविष्य से खिलवाड़, भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरा बोकारो जिला क्रिकेट संघ

संवाददाता

बोकारो : बोकारो में क्रिकेट खेल के नाम पर बोकारो जिला क्रिकेट संघ के पदाधिकारियों द्वारा युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ किये जाने का मामला फिलहाल सुर्खियां बटोर रहा है। इधर, भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरे बोकारो जिला क्रिकेट संघ के कथित पदाधिकारियों व उनके शागिर्दों की ओर से मामले में मुकदमा दर्ज करने वाले एक खिलाड़ी पर अब लगातार दबाव बनाया जा रहा है। संघ की ओर से कतिपय पदाधिकारियों ने पैसे लेकर क्रिकेट खेलवाने का आरोप लगाते हुए पुलिस में लिखित शिकायत दर्ज कराने वाले अंशुमन नामक एक खिलाड़ी पर यह दबाव बनाना शुरू कर दिया है कि वह अपना केस वापस ले ले। इस बात का खुलासा इस संवाददाता को प्राप्त उनके बीच आपसी बातचीत के कुछ ऑडियो व वीडियो से हुआ है। बातचीत के दौरान अंशुमन को फोन करने वाला व्यक्ति यह कहते सुना जा सकता है कि- तुमको केस वापस ले लेना चहिए। क्योंकि, पूरा माहौल बिगड़ गया है, आगे का सब काम रुका हुआ है। तुम जाकर केस वापस ले लो, तुमको पैसा मिल ही जाएगा। जबकि, एक व्यक्ति उससे यह कह रहा है कि- तुम्हें मीडिया में जाने की क्या जरूरत थी? तुम केस वापस ले लो. तुम्हें प्रसिद्धि चाहिए? नेतागिरी कर रहा है?

अंशुमन से हुई 1.90 लाख रुपये की वसूली

दरअसल, भ्रष्टाचार के मामले में क्रिकेट संघ से जुड़े संतोष पासवान नामक व्यक्ति के विरुद्ध बोकारो के हरला थाना में लिखित शिकायत करने वाला युवक अंशुमन सिंह उत्तर प्रदेश के देवरिया का रहने वाला है। अंशुमन का कहना है कि वह क्रिकेट खेलने के लिए बोकारो आया था। उसके अन्य साथी भी यहां से खेल रहे थे। बोकारो जिला क्रिकेट एसोसिएशन के सहायक सचिव संतोष कुमार ने खेलने के एवज में उससे चार लाख रुपये की मांग की। इसके लिए उसने चार किश्तों में उसे एक लाख, 90 हजार रुपये दिये। इसके बाद भी उसका चयन नहीं हुआ। इसके लिए उससे ढ़ाई लाख रुपये और देने की मांग की गई, जिसे देने में वह असमर्थ था। फिर उसने पैसे वापस करने को कहा। लेकिन, उसे पैसे वापस नहीं मिले और 31 जनवरी, 2023 को उसने हरला थाने में एफआईआर दर्ज कराई।

83 हजार रुपये की वापसी

अंशुमन सिंह ने बताया कि उसने जब पुलिस में शिकायत की और वापस घर चला गया तो कम्परमाइज के लिए बोकारो जिला क्रिकेट संघ ने लखनऊ के रहने वाले एक लड़को को हायर किया। उसने मुझे 48 हजार रुपये नगद और 35 हजार रुपये के चेक दिये। कहा कि केस वापस ले लो, उसके बाद बाकी के पैसे वापस मिल जाएंगे। इसी 2 अप्रैल को मुझे अपने से टिकट बनवाकर अपने साथ बोकारो लाया। उसने बोकारो के एसपी ऑफिस और हरला थाने में 83 हजार रुपये वापस देने की बात बता दी है। लेकिन, बाकी के पैसे अभी तक वापस नहीं मिले हैं। अब उस पर केस वापस लेने का दबाव बनाया जा रहा है।

पैसे लेकर बाहरी खिलाड़ियों को अवसर देने का भी आरोप

बोकारो में क्रिकेट खेल के नाम पर युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ का मामला इन दिनों चर्चा में है। स्थानीय कई खिलाड़ियों ने बोकारो जिला क्रिकेट संघ पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए पैसे लेकर स्थानीय खिलाड़ियों को नजरअंदाज कर बाहरी खिलाड़ियों को मौका देने की बात कही है। संघर्ष कुमार नामक एक खिलाड़ी ने बताया कि उन लोगों का परफॉर्मस नहीं देखा जाता है, जबकि बाहर के लड़कों का देखा जाता है। उन दोनों का बराबर ही प्रदर्शन रहता है, इसके बावजूद पहले से मिलीभगत होने के कारण बाहर के खिलाड़ियों पर ध्यान दिया जाता है। उन्हें खुद ही पहले से संघ के लोग बुलाते हैं। झारखंड के लिए रणजी ट्रॉफी तथा कई जूनियर क्रिकेट मैचों में खेल चुके राजू कुमार नामक एक खिलाड़ी ने कहा - मैं इसके लिए बोकारो जिला क्रिकेट संघ की वर्तमान जो भी कमेटी है, उसके सभी टॉप के अधिकारियों को दोषी मानता हूं, क्योंकि उनके बिना यह सब नहीं हो सकता। कोई कुछ सुनता ही नहीं और जो ज्यादा आवाज उठाता है, डिसीप्लिनरी कमेटी बनाकर उसको बैन कर दिया जाता है। मुझे भी गलत का विरोध करने पर तीन साल के लिए बैन कर दिया गया। ग्रामीण इलाके के आनंद कुमार ने कहा कि वह अपने भाई को खेलाने आया था. कहा- एसोसिएशन बहुत ज्यादा भ्रष्टाचार में लिप्त है। यहां बाहरी खिलाड़ियों को पैसे की सहायता से आगे खेलने के लिए मौका दे दिया जाता है, यहां की स्थानीय प्रतिभा को योग्य होने और मेहनती होने के बाद भी मौका नहीं दिया जाता है। गौरतलब है कि क्रिकेट संघ के कथित गलत कारनामों को लेकर आक्रोश अब सड़क पर उतर चुका है। हाल ही में कुछ युवकों ने संघ का पुतला दहन कर अपना विरोध जताया।

इधर, संघ ने आरोपों को बताया बेबुनियाद

इस बारे में पूछे जाने पर बोकारो जिला क्रिकेट संघ के संयुक्त सचिव राजेश्वर सिंह ने कहा कि संघ पर इस तरह के जो भी आरोप लगाए जा रहे हैं, वे पूरी तरह बेबुनियाद हैं। कहीं से भी पैसे का कोई खेल नहीं होता है। स्थानीय खिलाड़ियों को मौका दिया जाता है या बाहरी को, यह सब कुछ साफ-साफ है। टीम का चयन निष्पक्ष रूप से पूरी पारदर्शिता के साथ किया जाता है। जो भी खिलाड़ी टीम में शामिल होते हैं, उनका बाकायदा पूरा परिचय प्रमाण पत्र, उनके माता-पिता का पहचान पत्र आदि लेकर रखा जाता है। अंशुमन सिंह के मामले में उन्होंने कहा कि यह 2018 का मामला है। अंशुमन ने जिस संतोष पासवान पर पैसे लेकर क्रिकेट खेलवाने का आरोप लगाकर मुकदमा दायर कराया है, वह उस समय संघ में किसी भी पद पर नहीं था। इस संबंध में जब भुक्तभोगी द्वारा मुकदमा दर्ज किया गया तो उसे संघ के सहायक सचिव पद से अविलंब हटा दिया गया। अब पुलिस अपना काम करेगी. सजा होगी तो संतोष को होगी। इससे जिला क्रिकेट संघ का कोई लेना-देना नहीं है।

गुड न्यूज डीसी ने 50 मॉडल केंद्रों को विकसित करने का दिया जिम्मा, अविलंब संचालन का दिया निर्देश

लर्निंग म्यूजियम बनेंगे आंगनबाड़ी केंद्र

संवाददाता

बोकारो : जिले के निजी भवनों में संचालित आंगनबाड़ी केंद्रों में पढ़ने वाले नौनिहालों के लिए एक अच्छी खबर है। अब इन्हें नव निर्मित मॉडल आंगनबाड़ी केंद्रों में पढ़ने का अवसर मिलेगा, जहां सभी तरह की मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध होंगी। शनिवार को समाहरणालय स्थित सभागार में उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने प्रभारी जिला समाज कल्याण पदाधिकारी श्रीमती मेनका को नवनिर्मित 50 मॉडल आंगनबाड़ी केंद्रों को हैंडओवर किया।

इस अवसर पर उपायुक्त ने प्रभारी जिला समाज कल्याण पदाधिकारी श्रीमती मेनका को इन केंद्रों का संचालन अविलंब शुरू करने का निर्देश दिया। दरअसल, आंगनबाड़ी केंद्रों को मॉडल बनाया गया है, जिसे लर्निंग म्यूजियम के रूप में भी विकसित किया गया है। कार्यक्रम में उपस्थित उप विकास आयुक्त श्रीमती कीर्तीश्री ने बताया कि समाज कल्याण एवं मनरेगा के तहत कनवर्जेंस में जिले के विभिन्न प्रखंडों में 61 मॉडल आंगनबाड़ी केंद्रों का निर्माण कराया गया है, जिसमें आज 50 मॉडल आंगनबाड़ी केंद्रों को संबंधित विभाग के हवाले कर दिया गया। शेष को भी जल्द हैंडओवर कर दिया जाएगा।

जिले में सर्वाधिक 19 केन्द्र गोमिया में

50 मॉडल आंगनबाड़ी केंद्रों में से सभी प्रखंडों में आंगनबाड़ी केंद्र शामिल हैं। इनमें सर्वधिक केंद्र गोमिया प्रखंड में हैं, जहां कुल 19 केंद्र हैं। वहीं, बेरमो प्रखंड में 02, चंद्रपुरा प्रखंड में 01, चंदनकियारी प्रखंड में 05, चास प्रखंड में 10, जरीडीह प्रखंड में 01, कसमार प्रखंड में 04, नावाडीह प्रखंड में 01 एवं पेटरवार प्रखंड में 07 शामिल हैं।

डालमिया सीमेन्ट गेट पर धरना-प्रदर्शन शर्तों का उल्लंघन व फैसले के विपरीत : प्रबंधन

संवाददाता

बोकारो : डालमिया सीमेन्ट प्रबंधन ने कुछ रैयतों द्वारा फैक्ट्री के गेट पर किये गए धरना-प्रदर्शन को पूर्व में प्रशासन व प्रबंधन के बीच हुई वार्ता में लिये गए निर्णय एवं शर्तों का उल्लंघन बताया है। साथ ही कुछ स्वार्थी तत्वों द्वारा सीधे-सादे ग्रामीणों को गुमराह किये जाने का आरोप लगाया है। प्रबंधन की ओर से मंगलवार को जारी एक विज्ञप्ति में बताया गया कि डालमिया सीमेंट फैक्ट्री गेट पर रोजगार को लेकर कुछ भू-मालिकों द्वारा एक प्रदर्शन किया गया। जबकि, जिनकी भूमि मूल रूप से सेल की स्थापना के लिए अधिग्रहित की गई थी, तब उन्हें उचित मुआवजा भी दिया गया था। बालीडीह के थाना प्रभारी राम प्रवेश ने सभी दस्तावेजों, तथ्यों और आंकड़ों को देखने के बाद प्रदर्शनकारियों को स्पष्ट किया कि कंपनी ने 29.11.2021 को आयोजित बैठक की सभी सहमत शर्तों को बरकरार रखा है, जिसमें विशेष रूप से भूमि मालिकों को संविदात्मक रोजगार देने का उल्लेख है। अधिकांश लोग पहले के लिए गए निर्णय का सम्मान करते हुए पहले प्रोजेक्ट और फिर प्रोजेक्ट समाप्ति के बाद ऑपरेशन में संविदा में सेवा करते आ रहें हैं। परन्तु कुछ व्यक्तियों ने निहित स्वार्थ के लिए सीधे-सादे ग्रामीणों को गुमराह किया और कंपनी के बारे में गलत जानकारी फैलाकर लोगों को अनुचित मांगों के लिए उकसाना शुरू कर दिया।

डालमिया सीमेन्ट प्रबंधन ने बताया कि बियाडा ने डालमिया सीमेंट के बोकारो प्लांट लाइन-2 सेट-अप के लिए 15.75 एकड़ जमीन आवंटित की थी। भू-स्वामियों की चिंताओं को कम करने के लिए कंपनी ने जिला प्रशासन और भू-मालिकों के साथ प्रत्येक भूखंड के मालिक को एक संविदात्मक नौकरी प्रदान करने के लिए एक समझौता किया, ताकि वे अपनी आजीविका जारी रख सकें। इस प्रकार लगभग 44 लोग परियोजना स्थल पर कार्यरत थे। प्रबंधन का कहना है कि स्थानीय युवाओं को प्राथमिकता देते हुए संयंत्र अभी भी संबंधित एजेंसियों में शामिल कर उन्हें सक्षम बनाने के लिए तैयार है और भविष्य में उनकी योग्यता, अनुभव और कौशल के आधार पर इकाई में किसी भी रिक्ति पदों पर शामिल किया जायेगा।

इस्पातनगरी उतरा मिथिलांचल

आयोजन... विद्यापति स्मृति पर्व समारोह में कलाकारों ने बांधा समां

संवाददाता

बोकारो : बोकारो की प्रतिष्ठित सामाजिक व सांस्कृतिक संस्था मिथिला सांस्कृतिक परिषद का मुख्य वार्षिक उत्सव 56वां दो-दिवसीय विद्यापति स्मृति पर्व समारोह परिषद द्वारा संचालित सेक्टर 4 स्थित मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल परिसर में आयोजित किया गया। दोदिवसीय इस आयोजन में कलाकारों ने गायन, नृत्य और नाट्य-प्रस्तुतियों से समां बांध दिया। ऐसा लग रहा था मानो इस्पातनगरी में मिथिला की छटा उतर आई हो। इस भव्य आयोजन का उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि बीएसएल के निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश, विशिष्ट अतिथि बोकारो के एसपी चंदन झा, परिषद् के अध्यक्ष अनिल कुमार, उपाध्यक्ष अनिमेष कुमार झा, राजेन्द्र कुमार व महासचिव अविनाश कुमार झा, मिथिला महिला समिति की अध्यक्ष सीमा झा ने दीप प्रज्ज्वलित कर व महाकवि विद्यापति की तस्वीर पर माल्यार्पण व पुष्पार्चन कर किया। इसके पूर्व कार्यक्रम का प्रारंभ डॉ रंजीत कुमार झा, बाल शेखर झा द्वारा स्वस्तिवाचन से हुआ। सुप्रसिद्ध गायक अरुण पाठक ने मंगलगीत 'मंगलमय दिन आजु हे...' की सुमधुर प्रस्तुति की। तत्पश्चात उदीयमान कलाकार गुनगुन मजुमदार ने 'जय-जय भैरवि असुर भयाउनि...' गीत पर भावनृत्य की सुंदर प्रस्तुति की। अतिथियों के सत्कार में मिथिला महिला समिति की ममता झा, बीनू चौधरी, मधुबाला झा, वंदना झा, बबीता झा व अदिति झा ने स्वागत गीत 'आहां अतिथि भगवान यौ...' प्रस्तुत किया। इस बीच बोकारो, बीएसएल और मानवता के उत्थान में सेल चेयरमैन के रूप में चुने गए बीएसएल के निदेशक प्रभारी अमरेंदु प्रकाश के अवदानों पर सुंदर वृत्तचित्र प्रस्तुत किया गया। अपने सम्बोधन में निदेशक प्रभारी श्री प्रकाश ने कहा कि 'बोकारो मेरी मातृभूमि के समान रही है। मैंने अपनी जिंदगी के तीन दशक से अधिक समय यहीं बिताए हैं। हर शहर का अपना एक रंग होता है। बोकारो का भी विशेष रंग है। इसे विभिन्न तरह के रंगों से सजाने-संवारने तथा इस शहर के विकास में मिथिला सांस्कृतिक परिषद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।' उन्होंने परिषद के कार्यों एवं गतिविधियों की सराहना करते हुए अपनी शुभेच्छाएं व्यक्त कीं।

समारोह के प्रथम दिन बाहर से आमंत्रित कलाकारों में दिलीप दरभंगिया, रुपेश कुमार सिंह, गायिका डॉली सिंह, परिषद् के महासचिव अविनाश कुमार झा, प्रेस सचिव व गायक अरुण पाठक, गायिका करिश्मा प्रसाद ने मैथिली गीतों की सुमधुर प्रस्तुतियों से श्रोताओं को घंटों बांधे रखा। कार्यक्रम में कीबोर्ड पर राजेन्द्र, बैंजो पर चंदन, हैंडसोनिक पर राकेश कुमार सिंह, ढोलक पर अरुण कुमार, पैड पर छोटू व गिटार पर बबलू राज ने संगत की। दूसरे दिन स्व. लल्लन प्रसाद ठाकुर द्वारा लिखित मैथिली नाटक 'बड़का साहेब' का मंचन हुआ।

गरीबों को बत्तख पालन से जोड़ स्वावलंबी बना रहा रोटरी

बोकारो : रोटरी क्लब चास गरीबों को बत्तख पालन से जोड़कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में लगा है। इसी कड़ी में कुर्रा पंचायत के रामडीह गांव के 20 लाभुकों के बीच बत्तख चूजा का वितरण किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित राजकीय कुक्कुट प्रक्षेत्र, बोकारो की सहायक निदेशक डॉ पुष्पा कुमारी के हाथों प्रत्येक लाभुक को 10 बत्तख चूजा का वितरण किया गया। डॉ पुष्पा ने रोटरी क्लब चास द्वारा किए जा रहे कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि बत्तख पालन गरीब परिवारों के लिए एक तरह से चलते फिरते एटीएम मशीन की तरह है। रोटरी चास के अध्यक्ष नरेंद्र सिंह ने कहा कि सभी लाभुकों को 100% अनुदान पर ग्रामीणों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से उनके बीच बतख चूजा का वितरण किया जा रहा है। संस्थापक अध्यक्ष संजय बैद ने कहा कि रोटरी चास उत्कृष्ट कार्य कर स्वावलंबी भारत के निर्माण में छोटा सा योगदान दे रही है। मौके पर डॉ. सुमन कुमार, चास रोटरी की सचिव पूजा बैद, कुमार अमरदीप, मनोज सिंह, विपिन अग्रवाल आदि रहे।

हिमाकत मूर्तियों के साथ तोड़फोड़ के अलावा चोरी भी, लोगों में भारी आक्रोश

मंदिरों को निशाना बना सौहार्द बिगाड़ने का दुस्साहस

संवाददाता

बोकारो : बोकारो में इन दिनों कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा मंदिरों को निशाना बनाकर चोरी और मूर्तियों के साथ तोड़फोड़ करते हुए सामाजिक सद्भाव बिगाड़ने का दुस्साहस किया जा रहा है। जिले विभिन्न इलाकों में उपद्रवी तत्वों द्वारा धर्म विशेष के धार्मिक स्थलों में तोड़-फोड़, चोरी सहित अन्य आपत्तिजनक घटनाओं को हाल के दिनों में लगातार अंजाम दिये जाने से लोगों में आक्रोश बढ़ता ही जा रहा है। जिले के माराफारी थाना क्षेत्र अन्तर्गत काशियाटांड़ में स्थित एक मन्दिर में असामाजिक तत्वों द्वारा शिवजी और हनुमान जी की मूर्तियां तोड़ डाली गईं। ग्रामीणों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। सूचना मिलते ही घटनास्थल पर बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात कर दिया गया और प्रशासन द्वारा उपद्रवियों की पहचान की जा रही है। घटना के बाद ग्रामीणों में भारी आक्रोश व्याप्त है। यह घटना शुक्रवार देर रात की बताई जा रही है। शनिवार की सुबह मन्दिर के पास स्थित मैदान में घूमने व दौड़ने के क्रम में ग्रामीण युवकों ने देखा कि मन्दिर को क्षतिग्रस्त कर दिया गया है। साथ ही शिव जी और हनुमान जी की मूर्तियां क्षत-विक्षत हालत में मैदान में पड़ी हुई हैं। घटना की खबर मिलते ही बोकारो के सिटी डीएसपी कुलदीप कुमार, मुख्यालय डीएसपी मुकेश कुमार, ट्रैफिक डीएसपी पूनम मिंज सहित कई थाना प्रभारी व पुलिस बल के जवानों को वहां तैनात कर दिया गया। इसके अलावा डॉग स्क्वायड और फॉरेंसिक टीम भी घटनास्थल पर मौजूद थी। आसपास के जंगलों में खोजबीन की गई। बड़ी संख्या में आसपास के महिला-पुरुष ग्रामीण भी वहां मौजूद थे। फॉरेंसिक टीम ने मूर्तियों से फिंगर प्रिन्ट ली, ताकि अपराधियों तक पुलिस पहुंच सके। ग्रामीण प्रशासन से अपराधियों को तुरंत गिरफ्तार करने की मांग कर रहे हैं।

दरअसल, पिछले रामनवमी के दिन ही माराफारी थाने के काशियाटांड़ में उक्त मूर्तियों की स्थापना की गई थी। भगवान के घर चोरी की एक और घटना सामने आई है। अज्ञात बदमाशों ने एक ही रात चार मंदिरों को निशाना बनाया। वे दान पेटियां उखाड़ ले गए और आभूषण भी साथ ले चलते बने। घटना जिले के जरीडीह और बालीडीह थाना क्षेत्रों की है। जरीडीह थाना क्षेत्र के बाराडीह, तांतरी उत्तरी के काली मंदिर, तांतरी दक्षिणी के दुर्गा मंदिर, बालीडीह ओपी के कनारी पंचायत के दुर्गा मंदिर व बहादुरपुर दुर्गा मंदिर का ताला तोड़कर दान पेटियां व मां को चढ़ाए गए आभूषण की भी चोरी कर ली गई थी।

हफ्ते की हलचल

समाजोत्थान से पूरा होगा बाबा साहब का सपना : पांडेय

चंद्रपुरा : दामोदर घाटी निगम (डीवीसी) चंद्रपुरा ताप विद्युत केंद्र (सीटीपीएस) प्रबंधन द्वारा शुक्रवार को भारतरत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर की 132वीं जयंती समारोहपूर्वक धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर डीवीसी के अधिकारियों और कर्मचारियों ने प्लांट के मुख्य द्वार से प्रभात फेरी निकाली और समानता के लिए दौड़ लगाते हुए शिमला कॉलोनी होते हुए ईडी सीएल कार्यालय और अंबेडकर भवन में स्थापित बाबा साहब का आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। मुख्य अभियंता एवं परियोजना प्रधान सुनील कुमार पांडेय ने कहा कि समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्तियों के उत्थान होने पर ही बाबा साहब के सपना साकार होगा। इसके लिए सभी को एकजुट होकर लोगों को शिक्षित करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि दामोदर घाटी निगम स्थापना काल में बाबा साहब की अहम भूमिका थी। यही कारण है कि निगम 75 वर्ष की आयु में भी अपनी समृद्धि का परचम लहरा रहा है।

'एक्सपेरिएंशियल लर्निंग' पर कार्यशाला

बोकारो : नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को धरातल पर उतारने की दिशा में डीपीएस बोकारो की ओर से लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में अनुभव आधारित शिक्षा (एक्सपेरिएंशियल लर्निंग) को बढ़ावा देने तथा इससे विद्यार्थियों को लाभान्वित के निमित्त शिक्षकों के लिए विद्यालय में दो-दिवसीय क्षमता-निर्माण कार्यशाला आयोजित की गई। संसाधनसेवी (रिसोर्स पर्सन्स) के रूप में उक्त विषय की विशेषज्ञ बाल भारती पब्लिक स्कूल, औरंगाबाद (बिहार) की प्राचार्या साओली दत्ता एवं विद्या विकास पब्लिक स्कूल, रांची की विभागाध्यक्ष (अंग्रेजी) प्रेमलता कुमारी उपस्थित रहीं। सीबीएसई सेंटर आफ एक्सीलेंस (सीओई), पटना की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में बोकारो जिले के विभिन्न विद्यालयों से 60 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया। उन्हें प्रश्नोत्तरी एवं अंतःक्रिया सत्र सहित अन्य एक्टिविटी के जरिए एक्सपेरिएंशियल लर्निंग के हर पहलू की जानकारी दी गई। साथ ही, पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन एवं व्यावहारिक प्रयोगों के माध्यम से रुचिकर अध्यापन के टिप्स भी दिए। श्रीमती दत्ता ने सतत ज्ञानार्जन के लिए सदैव सीखते रहने की अनिवार्यता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि अनुभव आधारित शिक्षा आज बदलते शैक्षणिक परिवेश और समय की मांग है। ज्ञान की दुनिया केवल विद्यालय की कक्षा और किताबों तक ही सीमित नहीं है। इसके बाहर भी सीखने और समझने के असीम अवसर हैं और अनुभव-आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को यही अवसर प्रदान करती है।

सीआईएसएफ का राष्ट्रीय अग्निशमन सेवा सप्ताह शुरू

बोकारो थर्मल : बोकारो थर्मल स्थित डीवीसी सीआईएसएफ यूनिट में राष्ट्रीय अग्निशमन सेवा सप्ताह शुरू हुआ। बतौर मुख्य अतिथि डीवीसी के एचओपी एनके चौधरी, विशिष्ट अतिथि के रूप में सीई ओएंडएम एसएन प्रसाद, डीजीएम बीजी होलकर एवं सीआईएसएफ के डीसी बिरेन कुमार सेठी मौजूद थे। अतिथियों, विशिष्ट अतिथियों के अलावा संरक्षा प्रबंधक आरआर सिन्हा, उदय आर्या, निरीक्षक अनिल कुमार सहित सीआईएसएफ के अधिकारियों एवं जवानों ने शहीद श्रद्धांजलि स्थल पर पुष्प अर्पित कर शहीद जवानों को अपनी श्रद्धांजली अर्पित की। एचओपी ने कहा कि डीवीसी सीआईएसएफ यूनिट फायर विंग के कर्मियों एवं अधिकारियों द्वारा पूरे सप्ताह राष्ट्रीय अग्निशमन सेवा सप्ताह के दौरान अग्निसुरक्षा के लिए जागरुकता के कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहे हैं। इस दौरान एचओपी ने पूरे सप्ताह के लिए फायर से जागरुकता के लिए फायर के दोनों वाहनों को झंडी दिखाकर रवाना किया।

ओलंपियाडों में डीपीएस चास ने रचा इतिहास

बोकारो : झारखंड में उत्कृष्ट शिक्षा व विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध दिल्ली पब्लिक स्कूल चास के छात्र-छात्राओं ने 3 विभिन्न ओलंपियाडों 72 स्वर्ण, 20 रजत और 17 कांस्य पदक जीतकर नया इतिहास रचा। सिल्वर जोन, हमिंग बर्ड और साइंस ओलंपियाड के विजेताओं को डीपीएस चास के स्पेशल एसेंबली में कार्यवाहक प्राचार्या दीपाली भुस्कुटे ने मेडल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। 5वीं कक्षा के छात्र दक्षेश गोस्वामी ने सबसे ज्यादा 8 गोल्ड और 1 सिल्वर मेडल लेकर सबकी वाहवाही बटोरी बच्चों को बधाई देते हुए स्कूल की चीफ मेंटर डॉ. हेमलता एस. मोहन ने कहा कि डीपीएस चास पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए कटिबद्ध है। इसका जीता जागता उदाहरण विभिन्न ओलंपियाडों में बच्चों द्वारा लाए गए पदक हैं।

झारखंड में झुलसा रही तपिश, पारा 43 डिग्री पार

एक हफ्ते में ही बदल गया मौसम का मिजाज, अप्रैल में ही जल रहा खून, क्या होगा जब आएगा जून

संवाददाता

बोकारो/रांची : बोकारो सहित आसपास के जिलों और पूरे झारखंड में गर्मी अब अपनी रंगत में आ चुकी है। महज एक सप्ताह के भीतर मौसम ने यू-टर्न लिया है। कुछ दिन पहले तक जहां सुबह-शाम जाड़े के मौसम की तरह सिहरन महसूस हो रही थी, वहीं अब गर्मी सताने लगी है। कई जिलों का तापमान 43 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। मौसम विज्ञान केंद्र, रांची के अनुसार आनेवाले कुछ ही दिनों में अधिकतम तापमान 44 डिग्री तक जा सकता है।

शनिवार को पिछले 24 घंटे के दौरान चाईबासा में सबसे अधिक तापमान लगभग 43 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। आलम यह है कि दिन के तापमान में जहां लगभग 4 डिग्री सेल्सियस, तो रात का पारा भी सामान्य से 5 डिग्री सबसे अधिक दर्ज किया जा रहा है। अप्रैल महीने में ही मई-जून वाली गर्मी पड़ने से लोगों की हालत खराब हो गई है। अस्पतालों में अचानक से लू, बुखार, सर्दी-खांसी आदि के मरीजों की भीड़ दिखने लगी है। विशेषज्ञ मानते हैं कि अगर लोगों ने इस खतरनाक गर्मी में सावधानी नहीं बरती, तो यह जानलेवा भी साबित हो सकता है।

सुबह 9 बजे के बाद ही चलने लगती है लू

गर्मी का आलम यह है कि सुबह 9-10 बजे के बाद ही धूप असहनीय लगने लग रही हैऔर दोपहर होते-होते लू के थपेड़ों ने सड़क पर चलना दूभर कर दिया है. सड़कों पर अपेक्षाकृत भीड़ काफी कम देखी जा रही है। मुंह ढंककर एहतियात बरत लोग दोपहिया वाहन या पैदल आवागमन करते देखे जा सकते हैं। तपती धूप में दोपहर एक से डेढ़ के बीच स्कूल से छुट्टी के बाद बच्चों को घर लौटने में काफी दिक्कतें हो रही हैं। गर्मी से केवल इंसान ही नहीं, पशु-पक्षी भी परेशान हैं. जवाहर लाल नेहरू पार्क, बोकारो में जानवरों को गर्मी से बचाने के लिए पानी के हौदा की व्यवस्था की गई है, जहां भालू सहित अन्य जानवर पानी में घुसकर राहत की सांस ले रहे हैं। मौसम विभाग के अनुसार उष्ण कटिबंधीय इलाके के जलवायु पैटर्न अल-नीनो का प्रभाव भी महीने तीसरे हफ्ते में दिखना शुरू हो सकता है। ऐसे में गर्मी लंबी खिंच सकती है। मई-जून महीने में सर्वाधिक तापमान वाले दिन बढ़ सकते हैं। इससे जुलाई-अगस्त महीने का मॉनसून भी प्रभावित हो सकता है। इधर, गर्मी बढ़ते ही शहर में शीतल पेय की बिक्री बढ़ गई है. वहीं मिट्टी के घड़ों की बिक्री भी खूब हो रही है। पेड़ के नीचे नारियल पानी, लस्सी, ईख के जूस सहित कई तरह के शीतल पेय बिक रहे हैं। फ्रिज, कूलर, एसी, पंखा आदि की बिक्री में भी इजाफा देखा जा रहा है।

राज्य के अस्पताल अलर्ट मोड में

इधर, बढ़ती गर्मी को देखते हुए एनएचएम के अपर अभियान निदेशक ने राज्य के सभी जिलों के सिविल सर्जन को हीट स्ट्रोक से बचाव और इलाज को लेकर निर्देश जारी किया है। अस्पताल में स्टाफ, बेड, आईवी फ्लूड, ओआरएस और जरूरी दवाओं की पर्याप्त व्यवस्था करने का निर्देश दिया गया है। अस्पताल की क्षमता के अनुसार, हीट स्ट्रोक के मरीजों के इलाज के लिए बेड की व्यवस्था सुनिश्चित करने का भी निर्देश दिया गया है। बता दें कि लू लगने से उल्टी-दस्त, सिर दर्द, चक्कर आना, थकावट, शरीर में अकड़न, स्किन में दाग, हृदय संबंधी समस्या और ब्रेन स्ट्रोक का खतरा होता है। अस्पताल के ओपीडी में आने वाले मरीजों के लू के लक्षण की जांच करने का निर्देश दिया गया है। वहीं, ओपीडी में मरीजों के बैठने की उचित व्यवस्था के साथ शीतल पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित करने को भी कहा गया है। वार्ड में वाटर कूलर या फिर दूसरे उपाय करने को लेकर भी विभाग के द्वारा निर्देश दिए गए हैं। प्राथमिक उपचार कक्ष में ओआरएस कॉर्नर बनाने के लिए कहा गया है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के द्वारा अपने आसपास के लोगों को हीट स्ट्रोक (लू) से बचाव को लेकर जागरूक करने का निर्देश दिया गया है। इसके लिए सभी जिलों को फ्लेक्स बैनर उपलब्ध कराए गए है। लू लगने का प्रमुख कारण तेज धूप और गर्मी में ज्यादा देर तक रहना, शरीर में पानी और खनिज मुख्यतः नमक की कमी है।

फिर कोरोना की गिरफ्त में झारखंड, 17 जिले संक्रमित

विशेष संवाददाता

रांची : झारखंड एक बार फिर कोरोना महामारी की गिरफ्त में आ चुका है। राज्य के 17 जिले कोरोना की चपेट में हैं। महज एक हफ्ते के भीतर सूबे में कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या दोगुनी हो गयी है। शनिवार को मरीजों की संख्या बढ़कर 151 पर पहुंच गई है। रिम्स में एक कोरोना मरीज (बच्चा) भर्ती है। जनसंपर्क अधिकारी डॉ राजीव रंजन ने बताया कि संक्रमित बच्चे को आइसोलेशन वार्ड में भर्ती किया गया है। पीडियाट्रिक विभाग के डॉक्टरों की निगरानी में उसका इलाज चल रहा है।

बोकारो में तीन, तो रांची में सर्वाधिक 59 केस एक्टिव

बोकारो में कोरोना के तीन, चतरा में एक, देवघर में 16, दुमका में दो, पूर्वी सिंहभूम में 24, गढ़वा में एक, गिरिडीह में तीन, गोड्डा में एक, गुमला में एक, हजारीबाग में आठ, खूंटी में एक, कोडरमा में सात, लातेहार में सात, लोहरदगा में आठ, रामगढ़ में पांच, रांची में 59 और पश्चिमी सिंहभूम में चार क्रिय मरीज हैं। बोकारो में रेलवे स्टेशन सहित कई जगहों पर जांच की जा रही है।

तीन दशक बाद नारायणपुर में लगा महावीरी झंडा मेला

पुपरी : पुपरी प्रखंड के बलहा मकसूदन पंचायत में तीन दशक पुरानी आध्यात्मिक व सांस्कृतिक परंपरा एक बार फिर लौट आई। लगभग 30 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद बलहा मकसूदन पंचायत के नारायणपुर गांव में महारानी स्थान के समीप चार दिवसीय महावीरी झंडा मेला का भव्य आयोजन किया गया। इसमें सजा-संवरा आकर्षक विशाल महावीरी झंडा और आसपास रंग-बिरंगे खाद्य पदार्थों, खिलौनों आदि की दुकानें व स्टॉल लोगों को लुभाती रही। वहीं, दूसरी ओर झूले बच्चों के लिए आकर्षण का केंद्र बने रहे। युवाओं ने लाठी-भाला के खेल दिखाए और गीत-संगीत के कार्यक्रम भी हुए।

गुवाहाटी समेत कई राज्यों से दरभंगा का होगा सीधा संपर्क, 9 किमी बन रहा रेलखंड

दरभंगा : दरभंगा में रेल सुविधाओं के विस्तार में एक और नया आयाम जुड़ने जा रहा है। दरभंगा जंक्शन पर यात्रियों एवं ट्रेनों के बढ़ते दबाव को देखते हुए जंक्शन के करीब एक नई रेलवे लाइन काकरघाटी-शीशो हॉल्ट का निर्माण हो रहा है। इस रेलवे लाइन के बन जाने से दरभंगा एयरपोर्ट पर उतरने वाले यात्रियों को ट्रेन पकड़ने में सुविधा होगी एवं दरभंगा का सीधा रेल संपर्क गुवाहाटी सहित अन्य राज्यों से हो सकेगा। सूत्रों के अनुसार 253. 23 करोड़ रुपए की लागत से 9.8 किलोमीटर लंबे इस रेलखंड का निर्माण किया जा रहा है। काकरघाटी से दरभंगा जंक्शन आने वाली ट्रेनों का परिचालन पहले के तरह ही होता रहेगा। डीआरएम आलोक अग्रवाल का कहना है कि रेल लाइन का निर्माण इस वर्ष के अंत तक पूरा हो जाएगा। इधर, इस नई रेल लाइन के चालू हो जाने से सकरी-सहरसा-झंझारपुर कोसी ब्रिज के रास्ते सहरसा तक संपर्क हो जाएगा। साथ ही इस रूट से सहरसा से असम तक जाने वाली मेल व एक्सप्रेस ट्रेन का सीधा संपर्क हो जाएगा। इससे यात्रियों को काफी सहूलियत मिलेगी। इस रेल लाइन के माध्यम से भविष्य में दरभंगा से सीधा पूर्वोत्तर भारत का संपर्क जुड़ जाएगा। इस नई बाइपास के चालू हो जाने एवं नई रेलवे स्टेशन बन जाने के बाद दरभंगा जंक्शन पर ट्रेनों का दबाव कम हो जाएगा। डीआरएम की मानें तो शीशो-काकरघाओ बाइपास रेललाइन का निर्माण काफी तेजी गति से हो रही है। इससे इस साल के अंत तक पूरा कर लिया जाएगा। इसका निर्माण हो जाने से सीतामढ़ी की ओर से जो ट्रेन जयनगर को जाएगी, उसे दरभंगा जंक्शन आने की कोई जरूरत नहीं पड़ेगी, वहीं से होकर वह आगे चली जाएगी।

ईश्वरीय सत्ता के स्वरूप : परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी महाराज

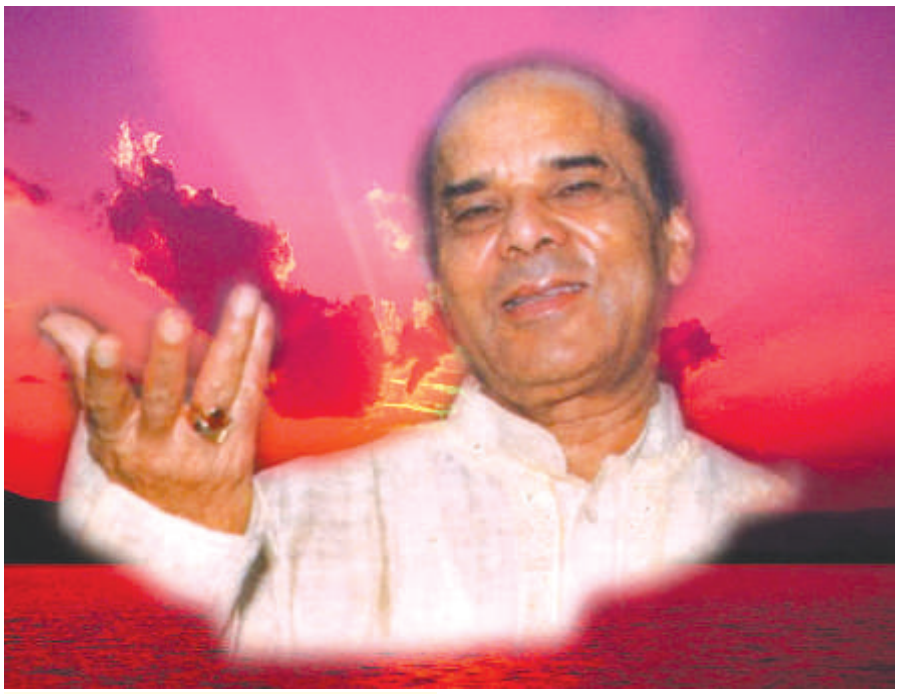

21 अप्रैल : अवतरण दिवस पर विशेष

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली-

वेद ही सभी प्रकार की विद्याओं के आदि स्रोत हैं। ऋषियों ने वेदों के आधार पर अपनी-अपनी व्याख्या उपनिषदों में स्पष्ट की और यही ज्ञान आगे चलकर पुराण, संहिता आदि के रूप में स्पष्ट हुआ। जो ज्ञान हमारे प्राचीन ऋषियों ने दिया, वही ज्ञान मानव जीवन का आधार है। आज हम मानव सभ्यता के विकास की बात करते हैं। यह विकास उचित दिशा में हुआ है, लेकिन इसके साथ ही साथ जीवन का सार्वभौमिक सिद्धान्त-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वेभद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दःख भाग्भवेत्।।

अर्थात सारे व्यक्ति रोग-शोक से रहित हों, सब लोग अपने जीवन में प्रसन्नता का अनुभव करें और स्नेह में निरन्तर वृद्धि हो, दुःख का सदैव नाश होता रहे। यह सिद्धान्त वेदों में ब्रह्मा के श्रीमुख से उद्धृत हुआ है, लेकिन आज यह सिद्धान्त कहां फलित हो रहा है? उन्नति की इस अंधी दौड़ में मनुष्य ने बाहर की यात्रा तो बहुत तेजी से की, नए-नए आविष्कार, दूरस्थ ग्रहों की यात्रा, विश्व में संचार सम्पर्क- सब कुछ बढ़ गया। जीवन के हर पक्ष के लिए विज्ञान ने नवीन रचनाएं कीं, लेकिन उससे भी महत्वपूर्ण स्थिति यह है कि क्या आधुनिक विज्ञान, मनुष्य को अपने भीतर की यात्रा कराने में समर्थ हो सका? इतनी उन्नति के बावजूद संसार में असन्तोष, हिंसा, लूट-खसोट, व्यभिचार, अत्याचार, असुरक्षा की भावना बढ़ती ही जा रही है। आपसी प्रेम और सद्भाव क्यों कम हो रहा है? मनुष्य के जीवन में सुख के सभी उपकरण हैं, लेकिन अन्तर्मन में आनन्द के उपकरण कहां खो गए?

ये ज्वलन्त प्रश्न हैं, जिनका समाधान हमारे वेदों, उपनिषदों में स्पष्ट है। ज्योतिष, आयुर्वेद, योग, साधना, तपस्या इन्हीं से निकली हुई शाखाएं हैं।

विज्ञान हमारी वैदिक संस्कृति में मूल रूप से विद्यमान रहा है, इसीलिए चरक जैसे महान चिकित्सक, आर्यभट्ट और भास्कराचार्य जैसे खगोलशास्त्री भी हुए हैं, जिन्होंने वैज्ञानिक सिद्धान्तों की स्थापना की। इन्हीं के साथ महान ज्ञानी ऋषि भी हुए हैं, शंकराचार्य, गौतम, विश्वामित्र, वशिष्ठ, कणाद, वेद व्यास, जिन्होंने जीवन के सिद्धान्तों की व्याख्या की। उनके ज्ञान का मूल आधार यह था कि किस प्रकार मनुष्य अपने जीवन में जन्म से मृत्यु तक की यात्रा स्वस्थ शरीर और चित्त के साथ कर सके। इसके लिए मंत्रों की रचना हुई। तंत्र विज्ञान अर्थात क्रिया विज्ञान का विकास किया गया और उसके लिए आवश्यक उपकरण यंत्र का निर्माण हुआ। ब्रह्माण्डीय शक्ति, जिसे देव शक्ति माना गया, उसके और मनुष्य के बीच तारतम्य बैठ सके, उसी हेतु साधना विज्ञान विकसित किया गया। ऋषियों का निश्चित सिद्धान्त था कि ब्रह्माण्डीय शक्ति अनन्त है और इस अनन्त ऊर्जा से मनुष्य निरन्तर शक्ति प्राप्त कर सकता है। उस शक्ति को अपनी शक्ति के साथ संयोजन कर, योग कर जीवन के दुःखों का निराकरण कर सकता है। देवी-देवता, सम्मोहन, आकर्षण, साधान, विज्ञान, मन्त्र, अनुष्ठान, यज्ञ, मुद्राएं इसी सिद्धान्त का प्रकट स्वरूप हैं। ऋषियों की परम्परा में इस साधना ज्ञान का विका इस शताब्दी में नवीन रूप से अद्वितीय सिद्ध पुरुषों द्वारा किया गया है। ऐसे ही विशेष दिव्यता के साथ हर युग में ईश्वरीय सत्ता का स्वरूप इस धरा पर महापुरुषों के रूप में प्रकट होता ही है, जो अपने ज्ञान, अपने चरित्र और अपनी चेतना द्वारा पूरे भूमंडल को एक नई दिशा प्रदान करते हैं। ऐसे युग-द्रष्टा मनुष्य के जीवन में ज्ञान की क्रान्ति लाते हैं।

हमारे जीवन का यह सौभाग्य है कि इस घटाटोप अंधकार भरे भौतिकता के आडम्बर में बंधी, अपने मूल मूल्यों से विमुख होती जा रही भारतीय संस्कृति को सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी (डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली) जैसे महान व्यक्तित्व अवतरित हुए, जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण इस बात में व्यतीत हुआ कि किस प्रकार मानव मूल्य उदात्त हो, व्यक्ति अपने जीवन में स्वयं की इच्छा के अनुसार प्रसन्न-चित्त जीवन जी सके, अपनी आत्मा का प्रकाश स्वयं देख सके और उसे हर समय यह पूर्ण विश्वास रहे कि उसके पास भौतिकता के साथ आध्यात्मिक सत्ता, ईश्वरीय शक्ति, आराध्य शक्ति, गुरु शक्ति सदैव है, जो उसे जीवन के हर अंधकार भरे कुएं से बाहर निकालकर शुभ्र प्रकाश चेतना से आप्लावित अवश्य करेगी। उन्होंने यह मार्ग दिखाया कि भौतिकता और आध्यात्मिकता दो विपरीत ध्रुव नहीं हैं, दोनों का संगम मनुष्य के जीवन में अति आवश्यक है-

अन्यदेवाहुर्विद्ययान्यदाहुर्विद्यया।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचक्षिरे।।

सद्गुरुदेव **डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली**, जिनका सन्यस्त नाम **परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी** है, ने इस ज्ञान को जन-जन की भाषा में विस्तृत रूप प्रदान करने हेतु अपने जीवन में संकल्प लिया। इसकी पूर्ति के लिए पूज्यश्री ने पूरे भारतवर्ष का भ्रमण किया, उन अज्ञात रहस्यों की खोज की, जिनके कारण मानव जीवन परिष्कृत और मधुर बन सकता है। उन्होंने संसार में रहकर सांसारिक जीवन को भी पूर्णता के साथ जिया, क्योंकि उनका यह सिद्धान्त था कि गृहस्थ जीवन की समस्याओं के पूर्ण ज्ञान हेतु गृहस्थ बनना आवश्यक है। अनुभव प्राप्त कर ही शुद्ध ज्ञान प्रदान किया जा सकता है। उनके द्वारा रचित सैकड़ों ग्रन्थों में मनुष्य के जीवन में त्रास को मिटाकर सन्तोष और तृप्ति प्रदान करने की भावना निहित है। इसी क्रम में उन्होंने मन्त्र-शास्त्र, तन्त्र-शास्त्र, सम्मोहन विज्ञान, ज्योतिष, हस्तरेखा, आयुर्वेद आदि को वैज्ञानिक एवं तार्किक रूप से स्पष्ट किया।

अपने जीवन की 65 वर्षों की यात्रा में मानव जीवन के लिए उन्होंने ज्ञान का अमूल्य भंडार खोल दिया, क्योंकि उनका कहना था कि ज्ञान ही शाश्वत है। इसी क्रम में उन्होंने सन् 1981 में 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान' मासिक पत्रिका प्रारम्भ की, जिसके माध्याम से सारे रहस्यों को स्पष्ट किया। आज उसी के बदले हुए स्वरूप में 'निखिल मन्त्र विज्ञान' लाखों घरों में पहुंच रही है और यह ज्ञान प्रदीपिका भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की धरोहर स्थापित कर रही है। यह पत्रिका ज्ञान का वह भंडार है, जो मानव जीवन के प्रत्येक पहलू से सम्बन्धित सभी समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करने के साथ-साथ जीवन को ऊर्ध्वमुखी गति प्रदान करने की दिशा में क्रियाशील बनाने का सार्थक प्रयास है।

अपना कार्य पूर्ण कर देने के पश्चात 3 जुलाई 1998 को सांसारिक काया का त्याग कर वे परमात्मा के साथ अवश्य समाहित हो गए, परन्तु आशीर्वाद स्वरूप उनके द्वारा स्थापित 'अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार' पूर्ण रूप से गतिशील है। उनके द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान ही इसका आधार है और ज्ञान की इस अजस्र गंगा में लाखों शिष्य सम्मिलित हैं। अपने पूज्य पिताश्री के मार्ग पर चलते हुए यह ज्ञान की गंगा निरन्तचर प्रवाहित होती रहे, इसी दिशा में सदैव प्रयत्नशील हूं।

पूर्ण अवतारी पुरुष

'ब्रह्मवैवर्त पुराण' में व्यास मुनि ने स्पष्ट लिखा है कि भगवान के अवतारी स्वरूप में दस गुण अवश्य ही परिलक्षित होंगे और इन्हीं दस गुणों के आधार पर संसार उन्हें पहचानेगा।

तपोनिष्ठः मुनिश्रेष्ठः मानवानां हितेक्षणः।
ऋषिधर्मत्वमापन्नः योगी योगविदां वरः
दार्शनिकः कविश्रेष्ठः उपदेष्टा नीतिकृत्तथा।
युगकर्तानुमन्ता च निखिलः निखिलेश्वरः।।
एभिर्दशगुणैः प्रीतः सत्यधर्मपरायणः।
अवतारं गृहीत्वैव जायते गुरुणां गुरुः।।

सद्गुरुदेव पूज्यपाद डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी, संन्यासी स्वरूप निखिलेश्वरानंद जी के जीवन का विवेचन आज यदि महर्षि व्यास द्वारा उद्धृत दस गुणों के आधार पर किया जाय तो निश्चय ही प्रारम्भ एक सुसंस्कृत ब्राह्मण परिवार में किया- सुदूर पिछड़ा रेगिस्तानी गांव था। जब इनका जन्म हुआ तो माता-पिता को प्रेरणा हुई कि इस तेजस्वी बालक का नाम रखा जाय- नारायण। यह नारायण नाम धारण करना और उस नारायण तत्व का निरन्तर विस्तार केवल युगपुरुष नारायण दत्त श्रीमाली के लिए ही संभव था, जिन्होंने अपने अल्पकालीन भौतिक जीवन में शिक्षा का उच्चतम आयाम ग्रहण कर 'पीएचडी' अर्थात डॉक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त की।

बाल्यकाल से ही ज्योतिष, मंत्र-तंत्र, यज्ञ, आयुर्वेद का ज्ञान धारण किया और यह ज्ञान धारण कर भगवान राम, श्रीकृष्ण की भांति पूरे आर्यावर्त का भ्रमण किया और उसे चेतना दी। धर्म शुद्ध रूप से आज भी स्थापित हो सकता है, अतः युगधर्म के अनुसार धर्म को धारण करो। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में अपने कार्यों के द्वारा आलोचना-प्रत्यालोचनाओं के कंटकाकीर्ण मार्ग को पार करते हुए स्वयं के व्यक्तित्व द्वारा प्रभु के स्वरूप को स्पष्ट किया।

संसार के सभी धर्म-ग्रंथों में गुरु को सर्वाधिक सम्मान और आदर प्रदान किया गया है। यह गुरु शब्द अपने आपमें बहुत ही गरिमामय, उच्च, श्रेष्ठतायुक्त एवं पवित्र है, क्योंकि मानव का जीवन एक आवश्यक तत्व है और जीवन का आवश्यक तत्व गुरु है। इसीलिए हमारे भारतीय धर्म-ग्रंथों में समस्त देवताओं की पूजा, अर्चना विधि बतायी गयी है, परन्तु उन सबसे उच्च स्थिति में गुरु को ही रखा गया है। इसीलिए कहा गया है -

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुदेवी महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु और महादेव से भी उच्चकोटि की कोई सत्ता है, जो पूरे ब्रह्माण्ड को गतिशील बनाये रखती है, तो वह ब्रह्म है...और ब्रह्म को यदि हम मूर्तिमंत रूप दें तो गुरु स्वरूप ही बनता है। इसीलिए गुरु शब्द की महत्ता जीवन के पल-प्रतिपल में, रेशे-रेशे में, कण-कण में और श्वास-श्वास में सर्वोपरि, अनन्य और अद्वितीय है।

सिद्धाश्रम के प्राण

सिद्धाश्रम देवताओं के लिए भी दुर्लभ और अन्यतम स्थान है, जिसे प्राप्त करने के लिए उच्च कोटि के योगी भी तरसते हैं। प्रत्येक सन्यासी अपने मन में यही आकांक्षा पाले रहते हैं कि जीवन में एकबार सिद्धाश्रम प्रवेश का अवसर मिल जाय। यह शाश्वत पवित्र और दिव्य स्थल मानसरोवर और कैलाश से भी आगे स्थित है, जिसे स्थूल दृष्टि से देखा जाना संभव नहीं। जिनके ज्ञान-चक्षु जागृत हैं, जिनके हृदय में सहस्त्रार का अमृत धारण है, वही ऐसे स्थल को देख सकता है। ऋग्वेद से भी प्राचीन यह स्थल अपने आपमें महिमामंडित है, जिसके संचालक परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी है, जिन्होंने अन्यतम योगियों के स्वामी सच्चिदानंद जी से पूर्णत्व दीक्षा प्राप्त की और आज वे सिद्धाश्रम के प्राण हैं। साधना और सिद्धियों के स्वामी पूज्य सद्गुरुदेव निखिलेश्वरानंद जी अपने शिष्यों के बीच सदैव विद्यमान हैं। ऐसे अद्वितीय योगी स्वामी निखिलेश्वरानंद जी को उनके अवतरण दिवस पर शत-शत नमन्।

प्रस्तुति : विजय कुमार झा

लोकसभा चुनाव 2024 में किसे मिलेगी फतह और किसे मात, जानिए ज्योतिषीय गणना से

ज्योतिषीय विश्लेषण

- बी. कृष्णा नारायण -

लोकसभा चुनाव 2024 का शंखनाद वैसे समय में हुआ है, जब गुरु मेष राशि में और शुक्र मिथुन राशि में जाने को आतुर है। मेष राशि से मिथुन राशि तक गुरु का संचार भारतीय राजनीति के मद्देनजर एवं मिथुन राशि में शुक्र का संचार देश की जनता के मिजाज के मद्देनजर काफी संवेदनशील माना जाता है। सभी दल अपनी अपनी रणनीतियों पर काम करना शुरू कर चुके हैं। ऐसे में ग्रहों ने क्या रणनीति तैयार की है, यह जानना बनता है।

भारत में चूंकि लोकतांत्रिक संसदीय व्यवस्था है, इसलिए यहां किसी व्यक्ति विशेष की कुंडली की गणना के आधार पर कोई ठोस निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है। जीत या हार, मंत्री पद की प्राप्ति या उससे वंचित रहना - इन सबकी जानकारी के लिए व्यक्ति विशेष की कुंडली के साथ उनके दल की कुंडली का भी आकलन किया जाना चाहिए।

यहां हमलोग माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की कुंडली की विवेचना के साथ, राहुल गांधी की कुंडली, अरविंद केजरीवाल की कुंडली और नीतीश कुमार की कुंडली का आकलन करेंगे। चूंकि इस आलेख को पढ़ने वाले कुछ व्यक्ति ज्योतिष की बारीकियों के जानकार नहीं होंगे, इसलिए उनको ध्यान में रखते हुए सरल भाषा में ज्योतिषीय आकलन प्रस्तुत किया जा रहा है-

1 – अरविंद केजरीवाल (आम आदमी पार्टी)

अरविंद केजरीवाल (16 अगस्त 1968 / 7 :30 अट / भिवानी, हरियाणा)

सिंह लग्न की कुंडली है। लग्न में बुध, शुक्र और गुरु हैं। द्वितीय में केतु, अष्टम में राहु, नवम में चंद्र, वक्री शनि है, द्वादश भाव में सूर्य, मंगल है।

विंशोत्तरी दशा चल रही है। गुरु/राहु की जो मार्च 2024 तक चलेगी। इसके बाद इनकी शनि की महादशा आरंभ होगी।

गुरु -लग्न में दशमेश शुक्र के साथ है।

राहु- अष्टम भाव में है। राहु का राश्याधिपति गुरु लग्न में दशमेश के साथ है। गुरु पंचमेश भी है। पंचमेश होकर पंचम भाव पर दृष्टि दे रहा है।

दशा/अन्तर्दशा का संबंध पंचम, नवम, दशम भाव से तो बन रहा है, परन्तु चतुर्थ से संबंध का अभाव है।

कुंडली में गजकेसरी योग नहीं बन रहा है।

29 मार्च 2024 के बाद शुरू होने वाली दशा होगी शनि की।

शनि कुंडली का षष्ठेश और सप्तमेश होकर नवम भाव में नीच का होकर द्वादशेश के साथ बैठा है एवं पंचमेश/अष्टमेश गुरु से दृष्ट है। यहां भी चतुर्थ से संबंध का अभाव है। छठा भाव, नवम भाव के साथ द्वादश भाव का जुड़ जाना - इनकी परेशानियों को बढ़ानेवाला होगा।

2 – राहुल गांधी– कांग्रेस (आई)

राहुल गांधी– 19 जून 1970/14 : 28/दिल्ली

तुला लग्न की कुंडली है। लग्न में वक्री गुरु है, तृतीय में चंद्र, पंचम में राहु, सप्तम में शनि, अष्टम में बुध, नवम में मंगल, सूर्य, दशम में शुक्र एवं एकादश में केतु है।

विंशोत्तरी दशा चल रही है राहु/गुरु की, जो मई 2024 तक चलेगी।

महादशानाथ राहु कुंडली के पंचम भाव में है। राहु का राश्याधिपति शनि सप्तम में षष्ठेश से दृष्ट है।

अन्तर्दशानाथ गुरु तृतीयेश और षष्ठेश होकर लग्न में है एवं चतुर्थेश, पंचमेश शनि से दृष्ट है।

चतुर्थ, पंचम, का संबंध तो बन रहा है, परंतु नवम, दशम का संबंध नहीं बन रहा है।

एक कमजोर स्थिति। चतुर्थेश और षष्ठेश का संबंध संपत्ति विवाद को बढ़ाने वाला होगा। गजकेसरी योग का अभाव है।

***निष्कर्ष**– पार्टी की मजबूत, परंतु व्यक्ति की कमजोर कुंडली सत्ता के शीर्ष पद की दावेदारी नहीं कर पाने का संकेत दे रही है। राहुल गांधी की जगह यदि वैसे व्यक्ति की कुंडली पर विचार की जाय, जिसमें ग्रहों ने गजकेसरी योग और चतुर्थ, पंचम, नवम एवं दशम भाव के बीच मजबूत संबंध बनाये हों तो वह संजीवनी का काम कर सकती है। वरना कांग्रेस के सीटों की गणना में कोई सुधार होता हुआ नजर नहीं आ रहा है।*

3 – नरेंद्र मोदी (भारतीय जनता पार्टी)

नरेंद्र मोदी– 17 सितंबर 1950 / 12 :09 / मेहसाणा, गुजरात

वृश्चिक लग्न की कुंडली है। लग्न में मंगल के साथ चंद्र, चतुर्थ में वक्री गुरु, पंचम में राहु, दशम में शनि, शुक्र एवं एकादश में सूर्य, बुध, केतु है।

इसी माह से शुरू होनेवाली विंशोत्तरी दशा है- मंगल/शनि की, जो जून 2024 तक चलेगी।

मंगल नवमेश के साथ लग्न में है। शनि चतुर्थेश होकर दशम भाव से चतुर्थ भाव पर पूर्ण दृष्टि दे रहा है तथा चतुर्थ भाव में बैठे पंचमेश से दृष्ट हैं।

चतुर्थ, पंचम, नवम एवं दशम भाव/भावेश का बहुत ही मजबूत संबंध बन रहा है।

शुभ गजकेसरी योग भी कुंडली में है। इस योग के साथ महादशानाथ एवं अन्तर्दशानाथ का जुड़ना सत्ता के शीर्ष पर पहुंचने के लिए शुभ योग है।

***निष्कर्ष**– मजबूत व्यक्ति की कुंडली एवं मजबूत पार्टी की कुंडली - सत्ता के शीर्ष पद पाने का प्रबल योग बना रहे हैं।*

4 – नीतीश कुमार

1 मार्च 1951 / 13 :20 / बख्तियारपुर, बिहार

मिथुन लग्न की कुंडली है। तृतीय में केतु, चतुर्थ में वक्री शनि, छठे में चंद्र, नवम में सूर्य बुध गुरु राहु एवं दशम में मंगल शुक्र है।

अगले महीने से विंशोत्तरी दशा शुरू होगी- राहु/ शुक्र की।

राहु नवम भाव में दशमेश एवं चतुर्थेश के साथ है। राहु का राश्याधिपति शनि चतुर्थ भाव में है।

शुक्र दशम भाव में षष्ठेश, एकादशेश के साथ होकर चतुर्थ भाव से नवमेश शनि से दृष्ट है।

गजकेसरी योग भी निर्मित है।

***निष्कर्ष**– सत्ता के दुर्ग को भेदने में पूरी तरह सक्षम, परंतु इनकी पार्टी की कुंडली उपलब्ध नहीं होने की वजह से कुछ ठोस एवं निर्णयात्मक कहना सही नहीं होगा।*

- नोट- सभी के जन्म से सम्बंधित डाटा, नेट से लिए गए हैं।

(यह लेखिका के निजी विचार व विश्लेषण हैं।)

नाट्यकला में सुनील मोहन ने बनाई अपनी खास पहचान

संवाददाता बोकारो। थिएटर और नाट्य-मंचन में अपने अद्वितीय अभिनय कौशल की बदौलत बोकारो के सुनील मोहन ठाकुर ने अपनी एक खास पहचान बनाई है। लगभग 55 वर्षीय सुनील अभिनय की हर विधा में पारंगत हैं। हास्यास्पद से लेकर गंभीर किरदारों तक को वह बखूबी निभाते हैं। बोकारो में मैथिली नाटक का मंचन हो और सुनील का नाम न आए, यह हो नहीं सकता। बोकारो में हर साल मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा होनेवाले विद्यापति स्मृति पर्व समारोह के दौरान शहरवासी नाटक में उनके रोल का बेसब्री से इंतजार करते हैं।

'मिथिला वर्णन' से एक बातचीत में सुनील ने बताया कि वर्ष 1992 से ही उन्होंने नाट्य-मंचन की शुरुआत राजा हरिश्चंद्र नाटक के साथ की थी। उसके बाद से यह सिलसिला लगातार जारी है। नाटक में उनका संवाद-प्रेषण, उनके हाव-भाव और भाव-भंगिमा बॉलीवुड के किसी बड़े अभिनेता से कम नहीं होते।

श्री ठाकुर को नाट्य-अभिनय के साथ-साथ नाटक के पटकथा-लेखन में भी अच्छी रुचि है।

उन्होंने मैथिली नाटक 'सहोदर' और 'कलियुगी कनिया' लिखी भी है। इसके अलावा कविता व गीत लेखन भी वह करते रहे हैं। सुनील ने बताया कि बचपन से ही उन्हें नाटक में रुचि थी। गांव में होने वाले मंचन से वह आकर्षित हुए और रुचि जगी थी। उन्होंने कहा कि नाट्य कला भारतीय संस्कृति की सभ्यता व परंपरा से जुड़ी है। नई पीढ़ी को भी इस ओर अपनी रुचि दिखानी चाहिए।

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल
जंगल की है हवा सुगंधित
शुद्ध वायु जैसे अनुबंधित
जंगल की भींगी है भोर
देख इसे मन होय विभोर

सूरज की ललमुँही किरण जब
शिखर को जंगल के करती है
पार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल

(क्रमशः)

कुमार मनीष अरविन्द

पेज- एक का शेष

बोकारो में देश...

अनुबंध (कॉन्ट्रैक्ट) दिया गया था। ओएनजीसी सीबीएम परिसंपत्ति के आधिकारिक सूत्रों के अनुसार लगभग 441 करोड़ रुपए की लागत से यह अपनी तरह का पहला सीबीएम फील्ड डेवलपमेंट प्रोजेक्ट है, जिसे बोकारो में ओएनजीसी सीबीएम एसेट द्वारा चलाया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि इस परियोजना के अधिष्ठापन से गैस की बिक्री के लिए सीबीएम एसेट ने ऊर्जा गंगा योजना के तहत गेल के साथ पाइपलाइन कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए पहले ही समझौता किया है।

ऐसे पूरी की गई परियोजना

पारंपरिक गैस कुओं के विपरीत सीबीएम कुओं को कृत्रिम लिफ्ट पंपों (यानी सक्कर रॉड पंप/प्रोग्रेसिव कैविटी पंप) के माध्यम से पानी निकालना होता है, तभी प्रारंभिक गैस ब्रेक के साथ-साथ निरंतर गैस उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। जीसीएस-बोकारो के पीजीटीआर के विशाल कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए विभिन्न चौबीसों घंटे नॉन-स्टॉप वेल संचालन, पर्यवेक्षण और जीसीएस में स्थापित उपकरणों की निगरानी, परिसंचरण के माध्यम से बीमार पड़ने वाले कुओं का तत्काल परिसमापन/पारस्परिक कार्य, कृत्रिम लिफ्ट के ड्राई रन से बचने के लिए इको-सर्वेक्षण, जीसीएस में उपकरण के प्रभावी कामकाज का आकलन करने के लिए समय-समय पर गैस और पानी का नमूना लेने जैसे कई अहम कार्य किए गए हैं।

उल्लेखनीय है कि ओएनजीसी ने बोकारो और झरिया की कोयला खदानों में कोल बेड मिथेन गैस की खोज 1996-97 से प्रारंभ की थी और भारत सरकार के तत्कालीन तेल एवं प्राकृतिक गैस मंत्री जनेश्वर मिश्र ने बोकारो में आकर इस परियोजना का शिलान्यास किया था। लगभग 26-27 वर्षों के बाद यह परियोजना अब मूर्त रूप ले चुकी है। इस परियोजना से बोकारो स्टील प्लांट, इलेक्ट्रोस्टील सहित अन्य बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठानों को प्राकृतिक गैस की आपूर्ति की जा सकेगी। साथ ही, कोयले की खपत में कमी आएगी। यह प्रदूषण रोकने की दिशा में भी एक बड़ा कदम होगा। निकट भविष्य में इसे रसोई गैस के विकल्प के रूप में भी बोकारो और आसपास के इलाके में वितरित किए जाने की योजना पर कार्य युद्धस्तर पर जारी है।

बोकारो से तय किया...

के महत्वपूर्ण पद पर आसीन थे। निदेशक प्रभारी का पद ग्रहण करने से पूर्व श्री प्रकाश ने बीएसएल में एक लंबे कार्यकाल के दौरान स्टील रोलिंग और फिनिशिंग में कई उपलब्धियां हासिल की हैं। बोकारो स्टील प्लांट के प्रभारी निदेशक रहते हुए उन्हें 2021-22 के दौरान कुछ समय के लिए राउरकेला स्टील प्लांट और बाद में दुगार्पुर एवं बर्नपुर स्टील प्लांट के निदेशक प्रभारी का अतिरिक्त प्रभार भी दिया गया था। उनके कार्यकाल के दौरान बोकारो स्टील प्लांट ने परिचालन के प्रत्येक क्षेत्र में एक नई ऊंचाई को छुआ है। संयंत्र के अलावा टाउनशिप में भी बेहतरी के कई नए पहल की गई साथ ही बोकारो को देश का पहला ग्लोबल एक्टिव पार्टनर सिटी बनने का गौरव भी प्राप्त हुआ। वह एक निपुण टेक्नोक्रेट हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई. पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

पीएम ने विश्व बैंक के कार्यक्रम 'मेकिंग इट पर्सनल : हाउ बिहेवियरल चेंज कैन टैकल क्लाइमेट चेंज' को किया संबोधित

जलवायु परिवर्तन से मुकाबले के लिए घर-घर से जनांदोलन जरूरी : मोदी

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो संदेश के माध्यम से विश्व बैंक के कार्यक्रम 'मेकिंग इट पर्सनलः हाउ बिहेवियरल चेंज कैन टैकल क्लाइमेट चेंज' को संबोधित किया। प्रधानमंत्री ने इस विषय के साथ अपने व्यक्तिगत जुड़ाव को स्वीकार किया और इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि यह एक वैश्विक आंदोलन बन रहा है।

चाणक्य को उद्धृत करते हुए, प्रधानमंत्री ने मामूली कार्यों के महत्व को रेखांकित किया और कहा 'अपने आप में, इस पृथ्वी के लिए किया जाने वाला प्रत्येक अच्छा कार्य मामूली लग सकता है। लेकिन जब दुनिया भर के अरबों लोग इसे एक साथ करते हैं, तो इसका प्रभाव बहुत बड़ा होता है। हमारा मानना है कि हमारी पृथ्वी के लिए सही निर्णय लेने वाले लोग हमारी पृथ्वी को बचाने के लिए लड़ाई में महत्वपूर्ण हैं। यही मिशन लाइफ का मूल है।' लाइफ आंदोलन की उत्पत्ति के बारे में बात करते हुए प्रधानमंत्री ने याद दिलाया कि 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में उन्होंने व्यवहारगत बदलाव की जरूरत के बारे में चर्चा की थी और अक्टूबर 2022 में संयुक्त राष्ट्र महासचिव और उन्होंने मिशन लाइफ का शुभारंभ किया था। उन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि सीओपी-27 के परिणाम दस्तावेज की प्रस्तावना में भी स्थायी जीवन शैली और उपभोग के बारे में चर्चा की गई है। प्रधानमंत्री ने कहा कि यदि लोग यह समझ लें कि केवल सरकार ही नहीं, बल्कि वे भी योगदान दे सकते हैं, तो 'उनकी चिंता कार्रवाई में बदल जाएगी।' उन्होंने विस्तार से बताया, 'जलवायु परिवर्तन का मुकाबला केवल सम्मेलनों की मेज पर नहीं किया जा सकता। इस लड़ाई को हर घर में खाने की मेज पर भी लड़ना होगा। जब कोई विचार चर्चा की मेज से उठकर खाने की मेज पर पहुंचता है, तो यह एक जन आंदोलन बन जाता है। हर परिवार और हर व्यक्ति को इस बात से अवगत कराना होगा कि उनकी पसंद से पृथ्वी को बचाने की लड़ाई को विस्तार और गति प्रदान करने में मदद मिल सकती है। मिशन लाइफ जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई का लोकतंत्रीकरण करने के बारे में है। यदि लोग इस बात के प्रति जागरूक हो जाते हैं कि उनके दैनिक जीवन के मामूली कार्य भी सशक्त हैं, तो पर्यावरण पर इसका बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।'

श्री मोदी ने भारत के उदाहरणों के साथ अपनी सोच की व्याख्या की और कहा कि 'जन आंदोलनों और व्यवहार में बदलाव के मामले में, भारत के लोगों ने पिछले कुछ वर्षों के दौरान बहुत कुछ किया है।' उन्होंने बेहतर लिंगानुपात, बड़े पैमाने पर स्वच्छता अभियान, एलईडी बल्बों को अपनाने का उदाहरण दिया जो हर साल लगभग 39 मिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन से बचने में मदद करता है। लगभग सात लाख हेक्टेयर कृषि भूमि को सूक्ष्म सिंचाई द्वारा कवर करके पानी की बचत करने का भी उन्होंने उल्लेख किया।

श्री मोदी ने बताया कि मिशन लाइफ के तहत सरकार के प्रयास स्थानीय निकायों को पर्यावरण के अनुकूल बनाने, पानी की बचत करने, ऊर्जा की बचत करने, कचरे और ई-कचरे को कम करने, स्वस्थ जीवन शैली को अपनाने, प्राकृतिक खेती को अपनाने, पोषक अनाजों को बढ़ावा देने जैसे कई क्षेत्रों में फैले हुए हैं।

उन्होंने कहा कि इन प्रयासों से 22 बिलियन यूनिट से अधिक ऊर्जा की बचत होगी, नौ ट्रिलियन लीटर पानी की बचत होगी, कचरे में तीन सौ पचहत्तर मिलियन टन की कमी आएगी, लगभग एक मिलियन टन ई-कचरे का पुनर्चक्रण होगा और 2030 तक लगभग एक सौ सत्तर मिलियन डॉलर मूल्य की अतिरिक्त लागत की बचत होगी। उन्होंने विस्तार से बताया, 'इसके अलावा, यह पंद्रह बिलियन टन भोजन की बर्बादी को कम करने में हमारी मदद करेगा। यह आंकड़ा कितना बड़ा है, यह जानने के लिए मैं आपको एक तुलनात्मक तथ्य देता हूं। एफएओ के अनुसार 2020 में वैश्विक प्राथमिक फसल उत्पादन लगभग नौ बिलियन टन था।'

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि दुनिया भर के देशों को प्रोत्साहित करने में वैश्विक संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका है। कुल वित्त पोषण के हिस्से के रूप में विश्व बैंक समूह द्वारा जलवायु वित्त में 26 प्रतिशत से 35 प्रतिशत तक की प्रस्तावित वृद्धि का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इस जलवायु वित्त का ध्यान आमतौर पर पारंपरिक पहलुओं पर होता है। अपने संबोधन का समापन करते हुए, उन्होंने कहा, 'व्यवहारगत पहलों के लिए भी पर्याप्त वित्तपोषण के तरीकों के बारे में सोचने की जरूरत है। मिशन लाइफ जैसे व्यवहारगत पहलों के प्रति विश्व बैंक के समर्थन का एक गुणक प्रभाव होगा।'